मण्डी-हि.प्र.। 'अलविदा डायबिटीज़' शिविर में बी.जे.पी. सांसद रामस्वरूप शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ.श्रीमंत साहू,माउण्ट आबू व ब्र.कु. शीला।

जयपुर-भवानी नगर। चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए मजिस्ट्रेट सीमा शर्मा, उद्योगपति मदनलाल शर्मा, ब्र.कु. हेमा व अन्य।

दिल्ली-खेड़ा कलाँ गांव। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए आप पार्टी के विधायक शरद चौहान। मंचासीन हैं ब्र.कु. शुभ्रा, ब्र.कु. शारदा व अन्य।

तारानगर-राज.। महामण्डलेश्वर बृजेश जी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला।

बयाना-उ.प्र.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम की अतिथि श्रीमती सुमन बुढवार,प्रधान,पंचायत समिती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. सोनू व अन्य।

वैर-भरतपुर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् विधायक भजन लाल जाटव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संतोष।

जो मोह रहित, संशय रहित, वही जीवन मुक्त

गतांक से आगे...

आगे भगवान ने कहा कि इंद्रियों के विषय से उत्पन्न सुख, ये आदि, मध्य और अंत के दुःख का कारण है। जो मनुष्य काम, क्रोध से उत्पन्न वेग को सहन कर, उससे मुक्त हो जाता है वह समर्थ आत्मा है। वही सच्चा योगी है। वह अपने मन और बुद्धि को परमात्मा में स्थित कर सकता है, श्रद्धा से उनकी शरण में चला जाता है, उनकी सर्व के प्रति सम दृष्टि हो जाती है। इसलिए संसार में रहते जो मोह रहित, संशय रहित है, वह जीवन मुक्त है। वह मन की एकाग्रता द्वारा असीम सुख का अनुभव करने लगता है। जीवन मुक्त इसलिए कहा जाता है कि मुक्ति से भी श्रेष्ठ है जीवन मुक्त स्थिति।

एक है, मुक्त हो जाना। इस शरीर से मुक्त हो जाना और परमात्मा के धाम में चले जाना। ये मुक्ति की अवस्था है। मुक्ति की अवस्था का अनुभव कभी होता नहीं है, जीवन मुक्ति इसलिए श्रेष्ठ है। उदाहरण के तौर पर जैसे व्यक्ति जब सो जाता है और जब गहरी नींद में सोया होता है। जिस वक्त वो सोया है, उस समय उसको अनुभव नहीं है। लेकिन जब वह उठता है, तब कहता है आज बड़ी गहरी नींद आयी। जिस वक्त वो सोया हुआ था, उस वक्त अनुभव नहीं था। उठने के बाद उसने अनुभव किया। ठीक इसी प्रकार जब व्यक्ति मुक्ति की अवस्था में, ये शरीर छोड़कर मुक्ति में चला जाता है। मुक्ति की अवस्था में तब उसको, कोई अनुभव नहीं होता है। लेकिन जीवन में हैं और वहाँ मुक्ति का अनुभव करें। इसलिए कहा मुक्ति से भी श्रेष्ठ जीवनमुक्ति है। मुक्ति की कामना नहीं लेकिन जीवन में रहते मुक्ति का अनुभव करके देखो कितना श्रेष्ठ है।

एक बार एक सन्यासी राजा जनक के पास जाता है। राजा जनक से कहता है कि हे राजन! हमने सब चीज़ों का सन्यास कर लिया, छोड़ दिया लेकिन उसके बाद भी हम अपने मन को कभी-कभी कंट्रोल नहीं कर पाते हैं। आवेग इस तरह से आता है जो मन को कंट्रोल करना असंभव सा महसूस होता है और आप इस सुख-सुविधा के भौतिक साधनों के बीच में रहते हुए अपने आपको विदेही कहते हो, यह कैसे संभव है? मुझे समझ में नहीं आता है। क्योंकि मैंने सब कुछ छोड़ दिया है, उसके बाद भी मैं अपने मन को कंट्रोल नहीं कर पाता हूँ। सबके बीच में रहते हुए हम कैसे विदेही बन सकते हैं? क्या आप मुझे बता सकते हैं?

राजा जनक ने कहा कि मुझे विदेही क्यों कहते हैं? यह प्रश्न तो बहुत अच्छा पूछा लेकिन मैं थोड़ा अपने कार्य में व्यस्त हूँ। जब मैं निवृत्त हो जाऊं फिर आपके साथ बैठकर के इस बात पर चर्चा करूंगा। लेकिन तब तक आपका समय भी कीमती है, वो भी व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। आप एक काम कीजिए जब तक मैं अपने कार्य से निवृत्त होकर के आता हूँ, तब तक आप मेरे महल के दूसरी तरफ बहुत सुंदर कारीगरी की गई है। आप उस कारीगरी का अवलोकन करके आईये। सन्यासी ने कहा ठीक है। लेकिन राजा ने कहा कि अभी कारीगरी चल रही है। वहाँ लाईटें लगी नहीं हैं। इसलिए आपको ये दीपक ले जाना पड़ेगा जिसकी रोशनी में ही आप सब कुछ देख सकते हैं, क्योंकि वहाँ अंधेरा होगा। सन्यासी ने कहा ठीक है।

राजा ने कहा एक बात और मैं आपको बता दूं। खिड़की दरवाज़े भी लगे नहीं हैं और वही हवा की दिशा है। इसलिए आपको ध्यान रखना पड़ेगा कि कहीं दीपक बुझ न जाए। क्योंकि दीपक अगर बुझ गया तो आप वो कलाकृति देख नहीं पाएंगे। सन्यासी ने कहा ठीक है। वो सन्यासी दीपक लेकर के गया और सारी कलाकृति को देखकर के जब वापिस आया तब तक राजा भी अपने कार्य से निवृत्त हो गया था। दोनों बैठे। राजा ने सहज भाव से सन्यासी से पूछा आप देखकर के आये तो सन्यासी ने कहा हाँ, देखकर के आया। कैसी लगी कलाकृति, तो सन्यासी ने कहा बहुत सुंदर कलाकृति है। तब राजा धीरे से पूछता है, ध्यान कहाँ था? सन्यासी ने कहा, कलाकृति के ऊपर और कहाँ? वास्तव में, ध्यान तो दीपक पर था, क्योंकि हवा तेज़ चल रही थी। दीपक बुझ नहीं जाना चाहिए, इसलिए उसी पर ध्यान था। - क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

स्वयं को... - पेज 2 का शेष

महात्मा, आप कुछ भी मूल्य चुकाये बिना ही फूलों की सुगंध का आनंद लेते रहे, यह चोरी का कृत्य हुआ।'' बुद्ध हतप्रभ हो गये।

इतने में एक व्यक्ति तालाब के पानी में जाकर कमल तोड़ने लगा। देवकन्या कमल तोड़ने वाले आदमी को देखती रही, पर उसने उसे रोका नहीं।

बुद्ध ने पूछाः ``देवी, मैं तो मात्र फूलों की सुगंध का ही सेवन कर रहा था, फूल को तो मैंने स्पर्श तक भी नहीं किया था। फिर भी आपने मुझे `चोर' कहा और यह आदमी निर्दयतापूर्वक फूलों को तोड़कर किनारे फेंक रहा है, फिर भी आपने उसको रोका क्यों नहीं?''

देवकन्या ने कहाः ``महात्मा बुद्ध, सांसारिक मनुष्य अपने लाभ और स्वार्थ की खातिर धर्म-अधर्म का भेद नहीं करते क्योंकि वे अज्ञानी हैं। लेकिन जिसका अवतार धर्म प्रचार के लिए हुआ है, उसे अपने प्रत्येक कृत्य को योग्य-अयोग्य विचार करने के पश्चात् ही अमल में लाना चाहिए।''

गौतम बुद्ध को इस बात का ख्याल आ गया कि यह देवकन्या कोई सामान्य नहीं। श्रद्धापूर्वक उन्होंने देवकन्या को प्रणाम किया और वे आगे बढ़े। उन्होंने बाद में अपने शिष्यों को ये बताया ``यदि वृक्ष के नीचे गिरे फल के लिए भी मन में लालच हो तो वृक्ष के प्रति आभार व्यक्त करके ही ग्रहण करना चाहिए।''

चरित्रवान व्यक्ति हर बात को योग्य-अयोग्य के मापदंड से तोलते हैं। देश की सच्ची सम्पत्ति उनकी चारित्रशीलता से महकते नागरिक हैं। ऐसे मनुष्य जिसमें शील रक्षा की भावना होगी, वे मन-वचन-कर्म से चरित्र कलंकित हो ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे।

इसीलिए स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि जगत में जिस वस्तु की आवश्यकता है, वह है चरित्र। ऐसे लोग चाहिए जिसका निःस्वार्थ जीवन प्रेम का उदाहरण हो। उनका ऐसा प्रेम एक-एक शब्द व्रज समान प्रतिभाशाली बना देंगे।

मनुष्य की छोटी-छोटी बातें उसके चरित्र को कलंकित कर देती हैं। ये परमाणु बॉम सर्जित विनाशक चिंता से भी अधिक चिंताजनक है। देश में घट रही चरित्रशील मनुष्यों की संख्या, मनुष्य की वाणी और दिमाग में आई अपवित्रता की कमी है। देश पुकार रहा है कि कहाँ गये वे लोग जो मेरे खातिर मरने को ही अपना जीवन समझते थे!

सम्बलपुर-ओडिशा। `अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, सुरेश पुजारी,नेशनल सेक्रेट्री,भाजपा दिल्ली, अशोक प्रधान,कन्वेनर, ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. नीलम, अशोक मोहन्ती,डिप्युटी डायरेक्टर,एग्रीकल्चर, ब्र.कु. आरती व सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पार्बती।